63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

63-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2025 ജനുവരി 4 മുതൽ 8 വരെ തിരുവനന്തപുരം

Item Code: 952 Participant Code: 327

यात्रा जारी ...

"बेटा, देखो मैं हिमालय में अपने प्यार के साथ चाय ले रहा हूँ।" बाप शंकर अपने बड़े जवान बेटे के विडियो कॉल पर हिमालय की खूबसूरत नजारे दिखा रहा था। "अरे क्या बात है! पापा, आप कब चले? आपकी सेहत तो ठीक है ना?" बेटे के इन सवालो को पापा मुस्कुराते हुए अपनी पत्नी को चिता की ओर बोलने लगा। "सुनती हो, हमारा बेटा हम से क्या पूछ रहा है? तुम्हें ही तो हिमालय आना था। पर तुम्हारे जीवीत रहने पर मैंने कही नहीं लेकर गया। पता नहीं वक्त कहाँ चला गया?

पापा की मुस्कान कब उनकी उदासी, आँखो पर आँसु लाई उन्हें पता ही नहीं चला। "तुम्हे दुनिया पुरा घुमना था ना? मैं तुम्हें तुम्हारी हर मन चाहा जगह लेकर जाऊँगा।

पत्नी की उस चिता की डिब्बे को पकड़कर उस से अतीत का खुलासा होता है।

शंकर एक डॉक्टर था। तीस साल मे उसको शादी एक बि.एस सी पढ़नेवाली जया से हुई। दोनो अपने ज़िंदगी से खुश थे। वो एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे।

एक दिन, शंकर और जया नदी के किनारे साथ मे बैठकर एक दूसरे के साथ प्यार के वक्त बाँट रहे थे। नदी की कल-कल स्वर एक ही दिशा मे बहकर आखिर वह ~~एक साथ~~ बडे सागर मे पहुँचते हैं, चिड़िया की मीठी वाणी से वह सुहनेरा पल खुद माँ प्रकृति ही उनके लिए बनाया हो।

उस सुंदर अकेली शाम मे जया शंकर से कुछ कहती है! "जी, मेरे एक सपना है, मुझे पूरे दुनिया को देखना है, शादी से पहले मुझे स्कूल के अलावा पापा मुझे कहीं जाने नहीं देते और कहते हैं मैं एक लडकी हूँ, अकेले जाएगी तो कुछ हो गया तो?" "जब तुम्हारी शादी हो जाए तो अपनी पती के साथ कभी भी और कहीं भी जाओ मुझे कोई फर्क नहीं।" इसलिए क्या आप मुझे घुमावोगे घुमाने ले चलोगे?

जया की सारी बातें शांती से और उसे प्यार से देखकर बोला "मे तुम्हें हर जगह घूमने ले चलूँगा। शंकर अच्छा पती था। बताओं कहाँ जाना है? जया ने सोचकर बोला; 'हिमालय जाना है, मुझे वहाँ के सुंदर, सफेद मुलायम बर्फ के साथ खेलना है, फिर केरल, दिल्ली और पूरा भारत घूमना है।

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 952 Participant Code: 327

"ठीक है", "सब जगाह जाएगें।" शंकर के इस विचार उस जया के चहरे मे मुस्कान लाई। ~~वह बाहर~~ फिर उस समय उसे एक अस्पताल से बुलावा आकर जया को घर छोडकर चला गया।

शंकर डॉक्टर होने के कारण वह काम मे और व्यस्त होने लगा। जया भी अपने काम मे लगी। उनके दो बच्चे हुए फिर उनके पीछे साथ और काम के बाद कभ उनकी वक्त गुसरा उन्हें पता ही नहीं चला। जया की हिमालय के सपने के साथ ~~यात्रा~~ यात्रा जारी थी। मगर उनका हालतों के कारण वह एक दूसरे से ही दूर हो गए।

फिर हुआ ~~मो~~ ~~फोन~~ यंत्रों की खोज जिससे लोगों अपनों से बातें कर सकें मगर

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 952 Participant Code: 327

उसी यंत्रो के कारण इस परिवार अपनों
से कई दूर हो गए। जब सब काम से
घर आते है, आराम मे नाम पर सबके
~~से~~ हाथों मे ~~से~~ फोन होता है। शंकर
और जया को दोनों ~~इस~~ इसके कारण दूर हो गए।

शंकर जब अपने बुढापे मे आया तभी
उसे वह प्यार पल याद हुए। उसकी प्यारी
पत्नी जया के साथ वह बिताने का सोचा।
~~कर~~ जब वह यह बात जया को ~~बताई~~
हिमालय यात्रा के बारें मे सूनी तभी वह
बहुत खुश हुई। वह सारी चीज़े अपने
बस्ते मे ~~ले~~ ले जाने केलिए डालने लगी।

मगर क्या पता था की यह खुशी ~~कु~~ कुछ
वक्त की मेहमान थी। जया नए कपडें लेने
दूकान ~~पहुँची~~ से निकली तभी ~~असल~~ उसकी

गाडी से एक भयंकर दुरघटना हुई जिसने शंकर की रोशनी जया उसके जीवन मे अंधकार बिछाकर चली गई। उसका हिमालय का सपना केवल एक कागज़ की नाव की तरह डूब गई।

शंकर सोच मे पड गया। उसे यह कई एहसास कैसे हुए जो की वह पहले करता तो जीवन मे खुश रह पाता। डॉक्टर होने के कारण व्यस्त होने से उसे घर पर समय नहीं दे पाया। समय की यात्रा तब ज़ारी थी, है और रहेंगी। प्रस्तुत कवि ने मलयालम मे कविता मे कहा है, "जिंदगी केवल जलते हुए लोहे मे गिरे हुए एक बूँद पानी जैसा है", उसी तरह क्षणिक है मानव जिवन, सब एक दिन काल के मुँह मे जाना है, कब कैसे पता नही, इसलिए अपनों के जीवीत रहने पर ही उनकी इच्छा पूरा करके देना चाहिए।

अपनों के साथ बिताया हुआ पल भी एक मंदिर में कुछ पल के लिए विश्राम करने आने वाले लोगों की तरह है। आते हैं कुछ पल विश्राम कर चले जाते हैं, उसी तरह शंकर का परीवार।

जब उसने यह कविता पढ़ी तो उसे "अपने जिंदगी के सफर का मतलब पता चला। सफर मंज़िल से भी खूबसूरत होता है। इसे जिवन मे लेकर शंकर जया के सपनो को पूरा करने उसकी चीता को जया समझकर वह अपने यात्रा ज़ारी रखा। अब वो अपनी हर पल जया के याद में और बच्चो के प्यार मे अपने जिन्दगी के आखिर सफर होने वाले यात्रा पर ज़ारी है।

जया से माफी माँग जब वह असलीयत पर पहुँचा तब आँसू से भरे आँखे साफ करके उस शिकर पर पहुँच

सफेद, ठिठुरती ठंड भर उस पहाड़ों पर मलयानिल की लहरें उसे प्यार से उसे बंदित किया, उसे जया की यादें मन में फिल्म की तरह गुज़र रहा था। तभी उसे उस नदी वाला किस्सा याद आया। वह नदी का स्वर अपने कानों में सुन उस समय के आखिर में कुछ जोड़ते हैं और वह ऊपर से जया के चोटी पकड़कर बोलता है।

"देखा तुमने, उमर कोई भी हो अगर मनोबल हो तो हम सब कुछ हासिल कर सकते हैं।" शंकर ने बोला "आज से समय में महिला खुद अपने मंज़िल पाने केलिए घूमती है। काश मैं तुम्हें आत्मनिर्भर होने की सीख और ताकत देता, तो तुम मेरी राह देखकर अपने सपने पूरे नहीं कर रही होती,

"मुझे माफ करने जया, मै तुम्हारे लिए एक अच्छा पति नही बन पाया" यूंकर उस गलती का दोश अपने ऊपर ले रहा था, तभी वह एक भोरे रंग की धोती पहने हुए ~~एक~~ बड़ को नज़र अंदाज करते हुए एक संत उसके पास आकर बोलता है।

"देखो बालक, इसमें तुम्हारी गलती नही है, यह ईश्वर का खेल है जिस जब तक वह इस संसार पर जन्म लिए अपने कर्म से आज हो या पिछले जन्म की उसे खत्म करने तक यह संसार तुम्हे हर समय परिक्षा देती रहेगी। तुमने जो ~~इतन~~ इतना सहन किया है, इसी अनुभव की से तुम ज्ञानी और जीवन मे सही फैसला लेने मे तुम्हें प्राप्त किया है। यह घटनाए तुम्हारी जीवन के सीख है।

इतना बोलने पर एक ज़ोर की हवा वह हर जगह देखने लायक नही रखा। जब वह साफ हुआ तब वह संत वहाँ नही था। ~~मजर~~ मगर के नीचे बहुत सारे पीपल के पत्ते पडें। शंकर ने वह उठाया तो उसमें लिखा है क्या,

"मैं तुम्हारे अंदर ही बसता हूँ, तुम्हारे नाम मे ही मेरी शक्ति है। हिम्मत मत हारना, सबके लिए तुम्हे आगे बढना है"

आत्महत्या के मूह से शंकर को भगवान शीव ने बचाया ऐसा उसका मानना था। शंकर यानी शीव उसके अंदर था। उसके मकसत पता चलने पर शंकर उस अपने पत्नी के पिता हिमालय मे ~~खो एक~~ बो ~~रहा था~~ कर उसने गरिबों केलिए एक अस्पताल खोलकर वह मुफ्त मे उनकी इलाज कर रहा है।

~~इसी सोच को~~

उसी के साथ यह अच्छाई के देव शंकर अपने पत्नी के साथ अच्छाई फैलाकर इस दुनिया में रंग बिछाई इसे छोड़कर अब याद बन रहे गए हैं।

जिदंगी एक खूबसूरत सफर है। जितने भी लोग हैं, उतने लोगों के सफर अलग मंजिल भी होते हैं। यह सुन्दर पल पर मगर समय की यात्रा जारी है। जितने पल जिन्दा हैं उतने पल अपनों के साथ बिताए।